Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
May 2024 5(5), 675–684

PORTRAITURE OF ASHTA-NAYIKAS DESCRIBED FROM RASIKPRIYA IN PAHARI STYLE

पहाड़ी शैली में रसिकप्रिया वर्णित अष्टनायिकाओं का चित्रांकन

Sheril Gupta [1]

[1] Research Scholar, Department of Drawing & Painting, University of Rajasthan, Jaipur, Rajasthan, India

Corresponding Author
Sheril Gupta, sherilgupta03@gmail.com

DOI
10.29121/shodhkosh.v5.i5.2024.1011

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2024 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

ABSTRACT

English: 'Rasikpriya Granth' is a supramundane representation of Ashta-Nayika poetry. This awe-inspiring genre has diffused love in Pahari areas. In order to propagate the beauty of Rasikpriya, the Eight Nayikas imbued in 'Shringar Rasa' have been depicted in an emotionally charged manner by the contemporary poet Keshavdas. Pahari painters inspired by the poesy have expressed the youthfulness of these Nayikas in a charmingly artistic way. Accordingly, the painters have manifested their abstract feelings and enlivened the Ashta-Nayikas through their ideational strokes. It seems that every little particle of these miniature paintings sing the lyric of love. The Pahari-style miniatures have creatively shown the element of divine love in an attractive manner. Reasonably, this portrayal has touched the hearts of art lovers.

Hindi: रसिकप्रिया ग्रंथ अष्टनायिका के रस निरूपण का अलौकिक काव्य है। काव्य की इस मनमोहक रसधारा ने पहाड़ी क्षेत्रों में प्रवाहित होकर सर्वत्र सौन्दर्य ही सौन्दर्य बिखेरा। रीतिकालीन कवि केशवदास द्वारा कृत रसिकप्रिया काव्य में प्रेम की प्रीति को गति प्रदान करने के लिए अष्टनायिकाओं को श्रृंगार रस से परिपूर्ण अति भावप्रवण एवं शोभायमान रूप दिया गया है तथा अष्टनायिका की इन कविताओं से प्रभावित होकर ही पहाड़ी चितेरों ने स्वयं के बौद्धिक स्तर व सूझ-बूझ से नायिकाओं के यौवनकाल को अद्वितीय कलात्मक स्वरूप में प्रस्फुटित किया है। इस प्रकार चित्रकारों ने अपनी अमूर्त भावनाओं को मूर्त रूप प्रदान किया तथा अपनी तूलिका और कल्पनाशक्ति से रसिकप्रिया में वर्णित अष्टनायिकाओं को सजीव बना दिया इसलिए इन लघुचित्रों में एक-एक कण मानों प्रेम की भाषा बोलता प्रतीत होता है। पहाड़ी शैली के इन लघुचित्रों में अष्टनायिकाओं को प्रेम के दिव्य स्वरूप में अत्यंत आकर्षक तथा मौलिक दर्शाया गया है। इसी कारण यह चित्र कला प्रेमियों के मन के अन्तस्तल की ऊँचाईयों को छूकर सौन्दर्य की अनुभूति कराते हैं।

Keywords: Rasikpriya, Miniature Painting, Beauty, Pahari Style, Poetry, Ritikavya, Artistic, Drawing, Eight Nayikas, रसिकप्रिया, लघुचित्र, सौन्दर्य, पहाड़ी शैली, काव्य, रीतिकाव्य, कलात्मक, चित्रांकन, अष्टनायिका

1. प्रस्तावना

अष्टनायिका की अवधारणा भारतीय कला इतिहास का अतुलनीय विषय है। नायिका अर्थात् सौन्दर्य की देवी जिस रमणी के दर्शन मात्र से ही चित्र में श्रृंगार रस का संचार हो उठता है। अष्टनायिका की विचारधारा का प्रतिपादन सर्वप्रथम भरतमुनि ने अपने नाट्यशास्त्र में प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व किया ''इसी प्रकार उसी परिकल्पना को आधार बनाकर रीतिकालीन महाकवि केशवदास ने स्वयं के दृष्टिकोण से रसिकप्रिया काव्य में अष्टनायिकाओं का विस्तृत वर्णन किया था तथा इस विषय ने पर्वतीय क्षेत्रों में पनपी पहाड़ी शैली को सदैव ही अपनी ओर आकर्षित किया। Agarwal (2022) 17वीं से 19वीं शताब्दी के मध्य पहाड़ी शैली की विभिन्न उपशैलियाँ जैसे कांगड़ा, गुलेर, गढ़वाल, चम्बा, नूरपुर आदि में रसिकप्रिया काव्य वर्णित अष्टनायिकाओं का सर्वाधिक चित्रांकन हुआ।

अध्ययन का उद्देश्य:

प्रस्तुत शोध पत्र में कवि केशवदास कृत रसिकप्रिया ग्रन्थ में वर्णित अष्टनायिका आधारित पहाड़ी शैली में जो चित्र बने हैं उन पर कला विद्वानों और कला रसिकों का ध्यान आकर्षित करने हेतु इस विषय का चयन किया गया है। पहाड़ी शैली के अष्टनायिका विषयक लघुचित्र भारतीय कला इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण अध्याय है लेकिन वर्तमान में कहीं न कहीं यह विषय विलुप्त होते जा रहे हैं इसलिए इस विषय को और अधिक प्रासंगिक बनाने के लिए इन लघुचित्रों का अध्ययन कर नवीन तथ्यों को प्रकट करने का प्रयास किया गया है।

शोध प्रविधि: इस शोध पत्र में ऐतिहासिक एवं गुणात्मक अनुसंधान पद्धति की सहायता से निष्कर्षों को प्राप्त किया गया है जिसके अन्तर्गत प्राथमिक तथा द्वितीय स्रोत द्वारा तथ्यों का संकलन किया गया है।

मूल आलेख:

आचार्य केशवदास ने सन् 1591 में रसिकप्रिया काव्य की रचना की थी। यह ग्रंथ समय की प्रथा अनुसार रस निर्णय पर लिखा गया उत्तम ग्रंथ है। केशव सौभाग्यशाली कवि थे, जिन्हें ओरछा के परम प्रतामी राजा इन्द्रजीत जैसा रसज्ञ और गुणी आश्रयदाता मिला था। Agarwal (2022)' उन्हीं के दरबार की प्रसिद्ध नर्तकी राय प्रवीण की कलात्मक सुन्दरता, प्रेरणा एवं घनिष्टता से ही रसिक हृदय केशव ने रसिकप्रिया काव्य की रचना की थी जिसका मूल विषय अष्टनायिकाओं के यौवन काल का रूप सौन्दर्य था। Rani (2017) यदि इस सम्पूर्ण विषय का मूल्यांकन किया जाए तो ऐसा निश्चित ही पाया जा सकता है कि कवि केशवदास ने नर्तकी रायप्रवीण को केन्द्रित करते हुए अष्टनायिकाओं के स्वरूप में संयोग-वियोग के अनेक प्रसंगों को रसिकप्रिया ग्रंथ में समायोजित किया। इस ग्रंथ के सातवें प्रकाश (अध्याय) में कवि केशवदास बहुत ही बारीकी और कल्पनात्मक रूप से अष्टनायिका का विवेचन करते हुए कहते हैं कि-

अष्टनायिका वर्णन-(दोहा)

ये सब जितनी नाइका, बरनी मति-अनुसार।

केशवदास बखानियै, ते सब आठ प्रकार।।

यथा

स्वाधिनपतिका, उत्कहीं, बासकसज्जा नाम।

अभिसंधिता बखानियै, और खंडिता बाम।

केसव प्रोषितप्रेयसी लब्धाबिप्र सु आनि।

अष्टनायिका ये सकल अभिसारिका सु जानि।। Dehejia (2013)

अष्टनायिका आठ प्रकार की नायिकाओं का एक समूह है जिसको ष्आचार्य केशवदास ने दो भागों में विभक्त किया है-(1) प्रकाश (प्रकट प्रेम) (2) प्रच्छन्न (छिपा हुआ प्रेम)। Dwivedi (2011) इसके अन्तर्गत प्रत्येक नायिका को उनकी अवस्था, मनोदशा, स्वभाव एवं प्रियतम से उनके प्रणय सम्बन्धों के आधार पर निरूपित किया गया है और इन्हीं को जीवंत स्वरूप प्रदान करने के लिए पहाड़ी चितेरों ने क्षेत्रीय गुणों एवं विशेषताओं के आधार पर अष्टनायिकाओं को राधा की भूमिका में चित्रांकित किया तथा कृष्ण को उनके नायक के रूप में दर्शाया गया है। इस प्रकार नायिका (राधा) की मनोदशाओं को आत्मसात करती अष्टनायिकाओं की परिकल्पना सदैव ही कृष्ण के प्रति भावुक प्रेम के इर्द-गिर्द घुमती नजर आती है।

अष्टनायिकाओं के इन पहाड़ी रसिकप्रिया लघुचित्रों में लौकिक प्रेम प्रतीकों के सहारे अलौकिक प्रेम की व्यंजना भी की गई है अर्थात् नायिका रूपी राधा को श्रीकृष्ण के साथ आत्मा व परमात्मा के अद्भुत प्रतीकात्मक रूप में चित्रित किया है। इस प्रकार ष्अष्टनायिकाओं की आकृतियाँ सहज, मानवीय, सुन्दर व आकर्षक है और यह इस बात का प्रमाण भी देती हैं कि वे इसी धरती की हैं जहाँ चित्रकार पहाड़ियों की निर्मल एवं स्वच्छ धारा में अपना जीवन व्यतीत करता है। Pratap (2021) पहाड़ी क्षेत्रों की विविध उपशैलियों के चितेरों ने कवि केशव के शब्दों को रंगों के माध्यम से प्रेम की चाशनी में डूबो दिया है, इसलिए रसिकप्रिया में वर्णित इन अष्टनायिकाओं को स्वाभाविक, कल्पनात्मक, प्रतीकात्मक एवं उचित अलंकरण युक्त चित्रांकित किया है। Agarwal et. al (2022) इसी कारण कवि केशव की इस आदर्शमयी परिकल्पना को प्राणवान दृश्यात्मक रूप प्राप्त हुआ है। इन लघुचित्रों में अष्टनायिकाओं का शारीरिक

सौन्दर्य मनोविज्ञान पर आधारित है अर्थात् इन पहाड़ी चित्रकारों ने नायिकाओं की आकृतियों में संज्ञानात्मक और भावनात्मक तत्त्वों का अद्भुत मिश्रण किया है क्योंकि चित्रकार ने अपने जिस बौद्धिक कौशल से अष्टनायिकाओं को भावना, भय, क्रोध व प्रेम आदि सीमाओं में अभिहित किया है वह अत्यंत अनुपम और बेजोड़ है। इसलिए इन लघुचित्रों में कलात्मक तत्त्वों के साथ ही साथ मनोवैज्ञानिक तत्त्व भी सम्मिलित हैं। नायिकाओं की आकृति में प्रवहमान रेखाओं द्वारा स्त्री की स्वाभाविक मांसलता को उभार कर उनका भावनात्मक रूप से चित्रांकन किया गया है तथा नायिका के प्रत्येक रोमानी भावों को उद्घाटित करने हेतु इन लघुचित्रों मे स्वतंत्र रेखाओं के साथ-साथ मनमोहक वर्ण वैज्ञानिकता का भी प्रयोग किया है। अष्टनायिकाओं की प्रणय लीलाओं का अंकन अद्भुत व अद्वितीय है, रंग और रेखाओं से प्रस्फुटित यह लघुचित्र मूक काव्य से प्रतीत होते हैं जिस भाँति कवि केशव ने नायिकाओं के यौवनकाल में उनकी अदाएँ एवं नखरे आदि का वर्णन किया है उसी सौन्दर्य का दर्शन पहाड़ी शैली के लघुचित्रों में प्राप्त होता है।

अष्टनायिकाओं का तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य:

पहाड़ी कला की समस्त शैलियों में अष्टनायिकाओं के संयोग-वियोग, विरह-मिलन, प्रेम-घृणा, खिंचाव-विलगाव जैसे अनगिनत चित्र हैं जो अपने मधुर भाव प्रकट करते हुए हमारे मन प्राणों में रम जाते हैं। Rani (2017) इस प्रकार इन आठ प्रकार की नायिकाओं में प्रत्येक नायिका का अपना अलग प्रसंग है जैसे स्वाधीनपतिका नायिका को इन सभी नायिकाओं में प्रथम स्थान प्राप्त है क्योंकि यह अपने रूप एवं गुणों से सदैव ही अपने पति को अपनी ओर आकर्षित करती है इसलिए इसका पति हर आज्ञा का निर्वाह करता है। इसी भाँति वासकसज्जा और अभिसारिका नायिका श्रृंगार रस की उत्पत्ति करते हुए प्रियतम से मिलन के लिए पूर्ण रूप से तैयार हैं, इस प्रकार इन दोनों नायिकाओं के चित्रों में कहीं अपनत्व का अभिसार तो कहीं अतृप्ति की आह है। विरह प्रसंग के चित्रों में उत्का, अभिसंधिता, खंडिता, प्रोषितपतिका, विप्रलब्धा नायिकाएँ प्रेम-विरह की पीड़ा को हृदय की गहराईयों से व्यक्त करती नजर आती हैं अतः पहाड़ी चित्रकारों ने अपनी तूलिका से इन नायिकाओं के मुख पर क्रोध, व्याकुलता, चिन्तन, विलगाव के भाव को अत्यंत ही संवेगात्मक रूप से उभारा है। पहाड़ी कला में रंगों की मोहकता द्वारा पे्रम और विरह के विभिन्न भावों को इन अष्टनायिका के लघुचित्रों में साक्षात् रूप दिया गया है। अष्टनायिका की इन आकृतियों में चित्रकार ने वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य के प्रयोग द्वारा अत्यन्त ही माधुर्य रूप को दर्शाया है इसलिए उत्कृष्ट रेखांकन के साथ ही कोमल चटक रंगों के प्रभाव से नायिका का सौन्दर्य उभर आता है। अष्टनायिका के प्रत्येक क्रिया कलाप को पहाड़ी चितेरों ने रूप सन्तुलन के आदर्श एवं अनुपम स्वरूप में प्रस्तुत किया है इसी कारण इन लघुचित्रों में चित्रकार ने अपनी अद्भुत कल्पना शक्ति से समुचित ज्ञान की परिधि को पार करके एक नवीनतम आभा का विकास किया है। यूँ तो पहाड़ी कला की प्रत्येक उपशैली ने अष्टनायिका के विषय को अपनी रंगीन तूलिका से संयोजित किया है परन्तु विशेष रूप से कांगड़ा, गढ़वाल और नूरपुर आदि शैली में अष्टनायिकाओं का जो चित्रांकन हुआ है वह अत्यंत ही प्रशंसनीय है। गढ़वाल शैली के कुशल चित्रकार मौलाराम ने अपनी भाव प्रधान अभिव्यक्ति, कोमल रेखाओं की मृदुलता तथा चटकीले रंगों के संयोजन से अभिसारिका नायिका की सुन्दर चित्रावली को दर्शक के समक्ष प्रस्तुत किया है। इसी प्रकार कला प्रिय राजा संसार चन्द के शासनकाल में कांगड़ा चितेरों ने अष्टनायिकाओं के सौन्दर्य को अपने अपूर्व और हृदयग्राही भावों से व्यक्त किया है। पहाड़ी चितेरों ने अष्टनायिकाओं को एक चश्म चेहरे लिए विलासी स्वरूप में पारदर्शी तथा अपारदर्शी वस्त्रों में अंकित किया है जिसमें नायिकाओं के शारीरिक अंग-प्रत्यंगों एवं हस्त मुद्राओं के साथ उन्नत उरोज अत्यन्त सजीव और गतिशील हैं इन नायिकाओं की मुखाकृतियों से अद्वितीय सौन्दर्य की रसधारा टपकती है जिसे देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि मानो हम जादू के संसार में आ चुके हैं। Agarwal (2020)

रसिकप्रिया में वर्णित अष्टनायिकओं का अवलोकन:

1. प्रच्छन्न स्वाधीनपतिका, यथा-(सवैया):

केसव जीवन जो ब्रज कौ पुनि जीवहु तें अति बापहि भावै।

जापर देव-अदेव-कुमारिनि वारत माइ न बार लगावै।

ता हरि पै तूँ गँवार की बेटी महावर पाँइ झवाँइ दिबावै।

हौं तौ बची अब हाँसिनहीं ऐसें और जौ देखै तौ ऊतरू आवै।। Tilak (2015)

चित्र 1 कांगड़ा शैली
म्यूजियम ऑफ आर्ट, लखनऊ.

चित्र वर्णन: प्रस्तुत चित्र संख्या-1 में रसिकप्रिया के उपर्युक्त सवैया में वर्णित कृष्ण के प्रेम को कांगड़ा चितेरों ने बहुत ही सुन्दर ढंग से चित्र में संयोजित कर अपनी भावपूर्ण अभिव्यक्ति दी है। चित्र में नायिका (राधा) चौकी पर विराजमान है तथा नायक (कृष्ण) नीचे बैठे राधा के श्री चरणों में महावर लगा रहे हैं। कृष्ण के पीछे खड़ी सखी के तीखे उलाहने से भी नायिका के मन पर कोई असर हुआ नहीं दिखता। चित्र में राधा-कृष्ण की निकटता का रसमय दृश्य देखकर दर्शक का मन आनंदातिरेक होने लगता है। चित्रकार ने इस चित्र में हल्की रंग योजना द्वारा प्रेम के अलौकिक भाव को उत्पन्न किया है। चित्र में ऊपर की ओर मोर का अंकन बहुत ही कलात्मक रूप से किया गया है इस प्रकार कांगड़ा चितेरों ने स्वाधीनपतिका नायिका के सूक्ष्म से सूक्ष्म काव्य भाव को सुन्दर रेखाओं की परिधि में बाँध दिया है।

2. प्रकाश उत्का, यथा-(सवैया):

सुधि भूलि गई, भुलए किधौं काहू कि भूलेई डोलत बाट न पाई।
भीत भए किधौं केसव काहू सों, भेंट भई कोऊ भामिनि भाई।
मग आवत हैं किधौं आइ गए, किधां ै आवहिंगे सजनी सुखदाई।
अब आए न नंदकुमार बिचारि, सु कौन बिचार अबार लगाई।। Tilak (2015)"

चित्र 2 नूरपुर शैली
सैन डिएगो ऑफ आर्ट, कैलिफोर्निया, यू.एस.ए.

चित्र वर्णन: प्रस्तुत चित्र संख्या-2 में नूरपुर शैली के चित्रकारों ने रसिकप्रिया में वर्णित प्रकाश उत्का (सवैया) का चित्रांकन बहुत ही सुन्दर और प्रभावोत्पादक किया है। चित्र में प्रियतम के आगमन की चिन्ता नायिका को उदास किए हुए है इसलिए नायिका आशा और निराशा के मध्य की दुविधा में है उसके मन की बेचैनी का आभास उसके मुखमंडल पर स्पष्ट रूप से दर्शाया गया है। चित्र में उत्का नायिका का रूप सौन्दर्य रात्रि के दृश्य में भी आलोकित हो रहा है। पेड़ की डाली पकड़े वह अपने मनोभावों को प्रकट कर रही है, इस प्रकार चित्रकार ने रंगों की दीप्तिपूर्ण तूलिका से कवि के भाव को साकार कर दिया है।

3. प्रच्छन्न वासकसज्जा, यथा-(कवित्त):

चंदन बिपट बपु कोमल अमल दल,
कलित ललित लता लपटी लवंग की
कैसौदास तामें दुरी दीप की सिखा सी दौरि,
दुरवति नीलबास दुति अंग अंग की।
पौन पानी पंछी पसु बस जित जित,
होइ तित तित चैंकि चाहै चोप संग की।
नंदलाल-आगम बिलोकें कुजंलाल बाल,
लीनी गति तेहीं काल पंजर-पंतग की।। Tilak (2015)

चित्र 3 कांगड़ा शैली
नेशनल म्यूजियम, दिल्ली

चित्र वर्णन: प्रस्तुत चित्र संख्या-3 में कांगड़ा शैली के चित्रकारों ने प्रच्छन्न वासकसज्जा के कवित्त को अपनी तूलिका से बहुत ही मनोहरी दृश्य में उभारा है जिसमें नायिका एक सुसज्जित शैय्या पर बैठी प्रियतम के आने की प्रतीक्षा कर रही है। इस प्रकार चित्र में प्रेमी की अनुपस्थिति में प्रेमी के प्रतीक स्वरूप हिरन, विरहिणी (नायिका) का विरह ताप कम करता हुआ चित्रित किया गया है। चित्र में नायिका का लौकिक रूप-लावण्य, पक्षियों का मधुर कलरव, नृत्य मग्न मृग, अग्रभूमि में बहते कमल के फूलों में कल-कल करती जल की धारा आदि का सुन्दर संयोजन उपर्युक्त वर्णित कवित्त के भावों के अनुरूप हुआ है।

4. प्रच्छन्न अभिसंधिता, यथा-(कवित्त):

बार-बार बोले जब बोल्यौ न बालिस तब,
बालक ज्यों बोलिबे कौं कत बिललात है।
ज्यों ज्यों परे पांइन त्यों पाहन तें पीन भयौ,
होतु कहा अब कियें माखन सौ गात है।
केसौदास सब छांड़ि कियौ हठ सों हेत,
वाहू छोड़ि जिय जिये बिन कहा जात है।

ऐसे प्यारे पीय ही सों मान्यों न मनायो तब,

ऐसी तोहि बूझियै जु पाछें पछितात है।। Tilak (2015)

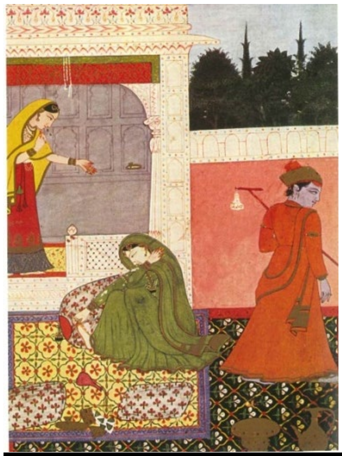

चित्र 4 कांगड़ा शैली

देहजिया, हर्षा.वी. (2013). रसिकप्रिया एटेलियर्स ऑफ लव में केशवदास का रीतिकाव्य प्रकाशकः डी.के. प्रिंटवर्ल्ड लिमिटेड, नई दिल्ली

चित्र वर्णन: प्रस्तुत चित्र संख्या-4 में कांगड़ा शैली की अभिसंधिता नायिका की भावधारा अत्यंत ही मनोरम एवं हृदयस्पर्शी है। अभिसंधिता को ही कलहान्तरिता ने नाम से भी जाना जाता है। नायक-नायिका के बीच जब मनमुटाव की स्थिति उत्पन्न होती है तब नायक के मनाने पर भी नायिका नहीं मानती है परन्तु नायक के चले जाने के उपरान्त नायिका स्वयं को धिक्कारते हुए कहती है कि जब वे (नायक) तुझे बार-बार बोलने का अनुरोध कर रहे थे तब तो तू नही बोली लेकिन अब उनके जाने पर व्याकुल है। जब वे मनाने के लिए पैर पड़ रहे थे तब तो तू पत्थर से भी कठोर हो गयी थी लेकिन अब मक्खन की भाँति मृदु होने से क्या होगा? तूने उन समस्त सुखों का परित्याग कर मान किया ही क्यों? उनको छोड़कर मर भी तो नहीं सकोगी। क्या तुझे ऐसा करना चाहिए था कि तू पीछे पछताये। इस चित्र में हरे वस्त्र पहने हुए नायिका को चिन्तित मुद्रा में कुछ झुककर बैठे हुए दर्शाया गया है तथा नायक (श्रीकृष्ण) को दुखी मन से जाते हुए दिखाया है। नायिका (राधा) का चित्रण प्रेम और उत्कण्ठा के भाव लिए चित्रित किया गया है तथा उसके हाथों की भाव-भांगिमा एवं मुद्रा उसके मन की व्यथा को व्यक्त करने में पूर्ण रूप से सफल है।

5. प्रच्छन्न खंडिता, यथा-(कवित्त):

आँखनि जौ सूझत न काननि तौ सुनियत,

केसौदास जैसे तुम लोकनि में गाए हौ।

बंस की बिसारी सुधिकाक ज्यों चुनत फिरौ

जूठे सीठे सीथ सठ-ईठ ढीठ ठाए है।

दूरि-दूरि करत हूँ दौरि दौरि गहौ पाइ,

जानौ न कुठौरू ठौरू जानि जिय पाए हौ।

काको घर घालिबे कौं बसे कहाँ धनस्याम,

घू घू ज्यौं घुसन प्रात मेरे गृह आए हौ।। Tilak (2015)

चित्र वर्णन: प्रस्तुत चित्र संख्या-5 में कांगड़ा शैली के चितेरों ने नायक को नील वर्ण कृष्ण के रूप में अत्यंत भावमय रूप से चित्रित किया है तथा प्रच्छन्न खंडिता नायिका (राधा) को सुन्दर वेशभूषा में महल के भीतर खड़े हुए दर्शाया है अन्य सखियाँ पास में खड़ी आपस में वार्तालाप कर रही हैं। इस प्रकार पूर्ण रात्रि बाहर बिताकर प्रातः काल घर आए कृष्ण पर राधा गुस्से से सवालों की बौछार करते हुए चित्रांकित है। चितेरों ने नायिका के मुख पर रोष और क्रोध के भाव के साथ ही नायक के मुख पर भय के भाव को

भी अत्यंत संवेदनशील रूप से प्रकट किया है। इस चित्र में चटक रंग योजना के साथ ही रेखीय परिप्रेक्ष्य का प्रयोग भी अति प्रशंसनीय है।

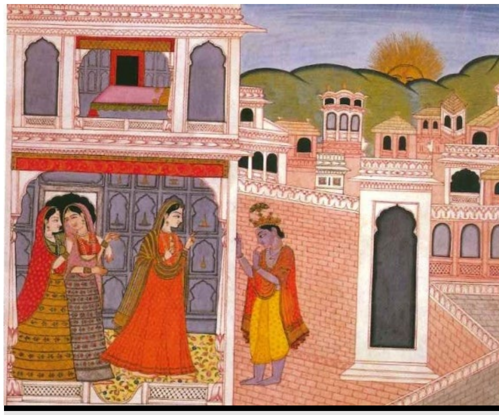

चित्र 5 कांगड़ा शैली
देहजिया कलेक्शन ऑफ कृष्णा आर्ट गैलेरी, मुम्बई

6. प्रकाश प्रोषितपतिका, यथा-(सवैया):

औधि दै आए उहाँ उनसों यह भोजन कै अब ही हम ऐ हैं।
ताकहँ तौ अब लौं बहराइकै राखी बरयाइ मरू करि मैं हैं।
बैठे कहा इनके ठिग केसव जाउ नहीं कोउ जाइ जु कैहैं।
जानत हौ उन आँखिनि तें अँसुवा उमहे बहुरयो पुनि रहैं।। Tilak (2015)

चित्र 6 कांगड़ा शैली
रॉयल कलेक्शन ट्रस्ट यू.के.

चित्र वर्णन: प्रस्तुत चित्र संख्या-6 में कांगड़ा चितेरों ने प्रोषितपतिका नायिका के हृदय की मार्मिक संवेदना का आभास कराया है। नायिका (राधा) पहले तो नायक (कृष्ण) के मनुहार करने पर भी नहीं मानी, यद्यपि नायक ने नायिका के पाँव तक पकड़े परन्तु जब कृष्ण ने किसी अन्य के घर भोजन का निमंत्रण स्वीकार कर लिया तब राधा विहृल हो प्रकाश प्रोषितपतिका नायिका के रूप में सखी को अपने हृदय की पीड़ा को व्यक्त करती है और वह इच्छुक है कि किसी प्रकार कृष्ण लौट आए। राधा उस अन्य स्त्री को अपनी सखी द्वारा संदेश पहुँचाती है जिसने कृष्ण को भोजन का निमंत्रण दिया है परन्तु उसे फिर भी संदेह है कि क्या कृष्ण बुलाने से तुरन्त लैटेगें। इस प्रकार चित्र में रंग और रेखाओं के माध्यम से ऐसी सामथ्र्य भावाभिव्यक्ति अन्यत्र दुर्लभ है। चित्र में नायिका की भाव-भांगिमा एवं मुखमंडल से चिन्ता तथा कामजन्य

विह्वलता स्पष्ट रूप से परिलक्षित होती है। सखी, नायिका को समझाते हुए चित्रित की गई है तथा नायक को अन्य घर के झरोखे से नायिका को भावमयी निगाहों से देखते हुए दर्शाया गया है।

7. प्रच्छन्न विप्रलब्धा, यथा-(सवैया):

सूल से फूल सुबास कुबास सी भाकसी से भए भौन सभागे।
केसव बाग महाबन सौ जुर सी चढ़ी जोंन्ह सबै अँग दागे।
नेह लग्यो उर नाहर सौ निसि नाह धरीक कहूँ अनुरागे।
गारी सौ गीत बिरी विष सी सिगरेई सिँगार अँगार से लागे।। Tilak (2015)

चित्र 7 कांगड़ा शैली

देहजिया, हर्षा. वी. (2013). रसिकप्रिया एटेलियर्स ऑफ लव में केशवदास का रीतिकाव्य प्रकाशकः डी.के. प्रिंटवर्ल्ड लिमिटेड, नई दिल्ली

चित्र वर्णन: प्रस्तुत चित्र संख्या-7 में प्रच्छन्न विप्रलब्धा नायिका के हृदयगत भावों को कांगड़ा शैली के चित्रकारों ने अपनी रसमयी तूलिका के माध्यम से प्रकट किया है। चित्र में नायिका को वृक्ष के नीचे संकेत स्थल पर चित्रांकित किया है तथा नायक के संकेत स्थल पर न आने के कारण नायिका का धैर्य-बांध टूट कर उसका आक्रोश मानो फूट पड़ता है इस प्रकार नायिका क्रोध के भाव में अपने समस्त आभूषणों को उतार कर फेंक रही है इसलिए चित्र में बाजूबन्द और माला आदि आभूषण पृथ्वी पर गिरे हुए दर्शाये गए हैं। चित्र में रौद्र रस को प्रकट करने हेतु कांगड़ा चित्रकारों ने पृष्ठभूमि के वातावरण में लाल रंग का अधिक प्रयोग किया है।

8. प्रच्छन्न कामाभिसारिका, यथा-(कवित्त):

उरझत उरग चपत चरननि फन,
देखत बिबिध निसिचर दिसि चारि के।
गनति न लागत मुसलधार सुनत न,
झिल्लीगन-घोष निरघोष जल-धारि के।
जानति न भूषण गिरत, पट फाटत न,
कंटक अटकि उर उरज उजारि के।
प्रेतनि की पूछैं नारि कौन पै तैं सीख्यौ यह,
जोग कैंसौ सारू अभिसारू अभिसारि के।। Tilak (2015)

चित्र वर्णन: कवि केशव ने अभिसारिका नायिका को तीन वर्गो में विभाजित किया है जिसमें प्रथम प्रेमाभिसारिका द्वितीय गर्वाभिसारिका तथा तृतीय कामाभिसारिका हैं। प्रस्तुत चित्र संख्या-8 कामाभिसारिका नायिका के कवित्त पर आधारित है। कवि केशव द्वारा वर्णित नायिका को गढ़वाल शैली के सिद्धहस्त चित्रकार मौलाराम ने अपनी उत्कृष्ट तूलिका से जीवंत कर दिया। चित्र में कामाभिसारिका

नायिका अपने प्रियतम से मिलने की इच्छा तथा कामवेग के साथ काली अँधियारी रात्रि में चली जा रही है मेघों का गर्जन, चपला की चमक, पैरों में लिपटते सर्प तथा भूत-पिशाचों का डर आदि उसके लिए कुछ नहीं है। इस प्रकार मौलाराम की तूलिका से सजी-संवरी यह नायिका लाल रंग के वस्त्र धारण किये हुए है, यह रंग नायिका की कामेच्छा एवं प्रेम को व्यक्त करता है क्योंकि प्रेम एवं अनुराग का रंग लाल माना गया है इस प्रकार सम्पूर्ण चित्र का संयोजन अद्भुत है।

चित्र 8 गढ़वाल शैली
लॉस एंजिल्स कांउटी म्यूजियम ऑफ आर्ट, कैलिफोर्निया, यू.एस.ए.

2. निष्कर्ष

पहाड़ी शैली भारतीय लघु चित्रकला का एक ऐसा प्रतिबिम्ब है जिसमें रीतिकालीन रसिकप्रिया काव्य में वर्णित अष्टनायिकाओं को अत्यन्त कलात्मक रूप से अलंकृत किया गया है। इन कविताओं के अनुरूप ही अष्टनायिकाओं की प्रत्येक भावभंगिमा को पहाड़ी चितेरों ने अपनी रसमयी तूलिका से समृद्ध कर कला इतिहास में नवीन आयाम प्रस्तुत किए जिससे समकालीन चित्रकार भी प्रेरणा ले रहे हैं। पहाड़ी चितेरों ने इन चित्रों में अपनी कला अभिव्यक्ति द्वारा सत्यम्, शिवम् एवं सुंदरम् के तीन तत्त्वों को भी प्रकट करने का सफल प्रयास किया हैं जैसे चित्र में सत्यम् तत्त्व लाने के लिए नायिकाओं की यथार्थ प्रतिकृति पर बल दिया गया, शिवम् तत्त्व पर बल देने हेतु समस्त कल्याणकारी आदर्शों को भी दृष्टि में रखा गया तथा सौन्दर्य तत्त्व की आवश्यकतानुसार इन नायिकाओं की आकृति में नव रसों को समाहित किया है। इस प्रकार इन लघुचित्रों के समग्र अध्ययन के पश्चात् यह ज्ञात होता है कि इन दृश्य काव्यों में आभायुक्त वर्ण संयोजन के साथ-साथ आध्यात्मिक दर्शन, कलात्मक शास्त्रीयता, प्रेम आकर्षण, सुहावना रूप तथा प्रणय लीलाओं आदि का अत्यन्त मनमोहक चित्रांकन है जो दर्शक अथवा कला प्रेमियों को सदैव ही अपनी ओर आकर्षित करता है इसलिए यह लघुचित्र वर्तमान में भी देश-विदेशों में अपनी अनूठी पहचान बनाए हुए हैं।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

लेखिका इस शोध कार्य के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नई दिल्ली द्वारा अवार्ड सीनियर रिसर्च फ़ेलोशिप (SRF) हेतु अपना आभार व्यक्त करती है।

REFERENCES

Agrawal, Raka (2022). Kangra Shaili ke Laghu Chitro Mai Shringar Rasa Nirapan. Publisher: Anu Book Meerut 1st ed. Page No. 84, 43

Agrawal, Shyam Bihari and Agrawal, Jyoti (2022). Bhartiya Chitrakala Ka Itihas, Medieval Part-2. Publisher Dr. Shayam Bihari Agrawal and Dr. Jyoti Agrawal, Allahabad. Page No. 169.

Agarwal, Shyam Bihari (2020). Bhartiya Chaitrakala, Kavya avam Sangeet. Publisher, Roopshilp Prakashan, Allahabad, 1st ed. Page No. 50.

Dehejia, V. Harsha (2013). Rasikapriya Ritikavya of Keshavdas in Ateleirs of Love. Published by Printworld Ltd., New Delhi, Page No. 79.

Dwivedi, Prem (2011). Pahari Painting, Kala Prakashan, BHU, Varanasi Page No. 35.

Pratap, Rita (2021). Bhartiya Chitrakala, Evam Murtikala Ka Itihas. Rajasthan Hindi Granth Academy, Jaipur, Rajasthan Publihser, Rajasthan Hindi Granth Academy, Jaipur. Rajasthan 36th ed. Page No. 264.

Rani, Archana (2017). Shringar and Beauty in Pahari Painting. Publisher, Swati Publication, Delhi, Page No. 42,76.

Tilak, Priyaprasd (2015). Acharya Keshavdas ki Rasikpriya. Publisher Kalyandas and Brothers Gyanvapi, Varanasi, 2nd ed. Page No. 146, 148, 148, 149, 150, 152, 153, 157.